SIDDHOHAM PARMARTHA KRIYA YOGA

The True-Self Ritual

CREATED BY MANJUNATH NIRANTAR
©2026

Namaskara

नमो वृषभनाथ (10 times)

Shloka (10 times)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भूभृताम्।

ज्ञातारं विश्व-तत्त्वानां, वन्दे तद्-गुण-लब्धये||

Chant

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

Begin Meditation (9 repetitions)

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

Procedure for Meditation

णमो अरहंताणं (slowly chant in mind while inhaling)
णमो सिद्धाणं (slowly chant in mind while exhaling)
णमो आयरियाणं (slowly chant in mind while inhaling)
णमो उवज्झायाणं (slowly chant in mind while exhaling)
णमो लोए (slowly chant in mind while inhaling)
सव्वसाहूणं (slowly chant in mind while exhaling)

Chant

ॐ वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः

ॐ बाहुबलि सिद्धाय नमः

ॐ गौतम गणधराय नमः

ॐ श्रुतकेवलि भद्रबाहु आचार्याय नमः

ॐ कुंदकुंदाचार्याय नमः

ॐ उमास्वामि आचार्याय नमः

ॐ धरसेन आचार्याय नमः

ॐ पुष्पदंत आचार्याय नमः

ॐ भूतबलि आचार्याय नमः

ॐ अकलंक आचार्याय नमः

ॐ माघनन्दि आचार्याय नमः

Who Am I?

What is my true self really like?

Shloka

स्वः स्वं स्वेन स्थितम् स्वस्मै स्वस्मात् स्वस्याविनश्वरे|

स्वस्मिन् ध्यात्वा लभेत् स्वोत्थमानन्दममृतम् पदम् ||

Begin chanting.

रागद्वेषमोहक्रोधमानमायालोभ-पाँचेन्द्रियविषयव्यापार-मनोवचनकायकर्म-भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म-ख्यातिपूजालाभ-दृष्टश्रुतानुभूतभोगाकांक्षारूपनिदान-माया-मिथ्यात्व-शल्यत्रय-गारवत्रय-दंडत्रयादिविभाव-परिणामशून्योऽहं ||1||

निजनिरंजनस्वशुद्धात्मसम्यक्श्राद्धानज्ञानानुष्ठानरूपाभेदरत्नत्रयात्मकनिर्विकल्पसमाधिसंजातवीतरागसहजानन्दसुखानुभूतिरूपमात्रलक्षणेनस्वसंवेदनज्ञान-सम्यक्प्राप्त्याभरितविज्ञानेनगम्यप्राप्त्या भरितावस्थोऽहम् ||2||

सहजशुद्धपारिणामिकभावस्वरूपोऽहम् ||3||

सहजशुद्धज्ञानानन्दैकस्वभावोऽहम् ||4||

भेदाचलनिर्भरानन्द स्वरूपोऽहम् ||5||

चित्कलास्वरूपोऽहम् ||6||

चिन्मुद्रांकितनिर्विभागस्वरूपोऽहम् ||7||

चिन्मात्रमूर्ति स्वरूपोऽहम् ||8||

चैतन्यरत्नाकर स्वरूपोऽहम् ||9||

चैतन्यामरद्रुम स्वरूपोऽहम् ||10||

चैतन्यामृताहार स्वरूपोऽहम् ||11||

चैतन्यचिह्न स्वरूपोऽहम् ||12||

चैतन्यकल्याणवृक्ष स्वरूपोऽहम् ||13||

चैतन्यपुञ्ज स्वरूपोऽहम् ||14||

ज्ञानज्योति स्वरूपोऽहम् ||15||

ज्ञानामृतप्रवाह स्वरूपोऽहम् ||16||

ज्ञानार्णव स्वरूपोऽहम् ||17||

परममंगल स्वरूपोऽहम् ||18||

निरवद्य स्वरूपोऽहम् ||19||

शुद्धचिन्मात्र स्वरूपोऽहम् ||20||

शुद्धाखण्डैकमूर्त स्वरूपोऽहम् ||21||

अनन्तदर्शन स्वरूपोऽहम् ||22||

अनन्तज्ञान स्वरूपोऽहम् ||23||

अनन्तसुख स्वरूपोऽहम् ||24||

अनन्तशक्ति स्वरूपोऽहम् ||25||

सहजानन्द स्वरूपोऽहम् ||26||

परमानन्द स्वरूपोऽहम् ||27||

परमज्ञानानन्द स्वरूपोऽहम् ||28||

सदानन्द स्वरूपोऽहम् ||29||

चिदानन्द स्वरूपोऽहम् ||30||

निजानन्द स्वरूपोऽहम् ||31||

निजनिरंजन स्वरूपोऽहम् ||32||

सहजसुखानन्द स्वरूपोऽहम् ||33||

नित्यानन्द स्वरूपोऽहम् ||34||

शुद्धात्म स्वरूपोऽहम् ||35||

स्वात्मोपलब्धि स्वरूपोऽहम् ||36||

शुद्धात्मानुभूति स्वरूपोऽहम् ||37||

शुद्धात्म संवित्ति स्वरूपोऽहम् ||38||

भूतार्थ स्वरूपोऽहम् ||39||

परमात्म स्वरूपोऽहम् ||40||

निश्चयपञ्चाचार स्वरूपोऽहम् ||41||

समयसारस्वरूपोऽहम् ||42||

अध्यात्मसारस्वरूपोऽहम् ||43||

परमकेवलज्ञानोत्पत्तिकारण स्वरूपोऽहम् ||44||

सकलकर्मक्षयकारण स्वरूपोऽहम् ||45||

परमाद्वैत स्वरूपोऽहम् ||46||

परमस्वाध्याय स्वरूपोऽहम् ||47||

परमसमाधि स्वरूपोऽहम् ||48||

परमस्वास्थ्य स्वरूपोऽहम् ||49||

परमभेदज्ञान स्वरूपोऽहम् ||50||

परमस्वसंवेदन स्वरूपोऽहम् ||51||

परमसमरसिकभाव स्वरूपोऽहम् ||52||

क्षायिकसम्यकत्व स्वरूपोऽहम् ||53||

केवलज्ञान स्वरूपोऽहम् ||54||

केवलदर्शन स्वरूपोऽहम् ||55||

अनन्तवीर्य स्वरूपोऽहम् ||56||

परमसूक्ष्म स्वरूपोऽहम् ||57||

अवगाहन स्वरूपोऽहम् ||58||

अव्याबाध स्वरूपोऽहम् ||59||

अष्टविधकर्मरहितोऽहम् ||60||

निरंजन स्वरूपोऽहम् ||61||

अष्टगुणसहितोऽहम् ||62||

कृतकृत्योऽहम् ||63||

लोकाग्रवासि स्वरूपोऽहम् ||65||

अनुपमोऽहम् ||66||

अचिंत्योऽहम् ||67||

अतर्क्योऽहम् ||68||

अप्रमेयस्वरूपोऽहम् ||69||

अतिशयस्वरूपोऽहम् ||70||

अक्षयस्वरूपोऽहम् ||71||

शाश्वतोऽहम् ||72||

शुद्धस्वरूपोऽहम् ||73||

सिद्धस्वरूपोऽहम् ||74||

परामपवित्रोऽहम् ||75||

स्वयम्भूरहम् ||76||

विशदाखण्डैकप्रत्यक्षप्रतिभासमयसकलविमलकेवलदर्शन स्वरूपोऽहम् ||77||

जगत्त्रयकालत्रयवर्तिसकलपदार्थयुगपदावलोकनसमर्थसकलविमलकेवलज्ञान स्वरूपोऽहम् ||78||

अवार्यवीर्यानन्तबल स्वरूपोऽहम् ||79||

अतीन्द्रियातिशयामूर्तिक स्वरूपोऽहम्||80||

अचिंत्यानन्तगुण स्वरूपोऽहम् ||81||

निर्दोषपरमात्म स्वरूपोऽहम् ||82||

ज्ञानावरणादिमूलोत्तररूपसकलकर्मविनिर्मुक्तोऽहम् ||83||

सकलविमलकेवलज्ञानादिगुणसमेतोऽहम् ||84||

निष्क्रियंटकोत्कीर्णज्ञायकैक स्वरूपोऽहम् ||85||

किञ्चिन्-न्यूनोऽत्तमचरमशरीरप्रमाणोऽहम् ||86||

अमूर्तोऽहम् ||87||

अखंण्डशुद्धचिन्मूर्तिरऽहम् ||88||

निर्व्यग्रसहजानन्दसुखमयोऽहम् ||89||

शुद्धजीवघनाकारोऽहम् ||90||

नित्योऽहम् ||91||

निष्कलंकोऽहम् ||92||

ऊर्ध्वगतिस्वभावोऽहम् ||93||

लोकाग्रनिवासोऽहम् ||94||

अनन्तदर्शनस्वरूपोऽहम् ||95||

अनन्तज्ञानस्वरूपोऽहम् ||96||

अनन्तवीर्यस्वरूपोऽहम् ||97||

अनन्तसुखस्वरूपोऽहम् ||98||

अनन्तगुणस्वरूपोऽहम् ||99||

अनन्तशक्तिस्वरूपोऽहम् ||100||

निर्वेद स्वरूपोऽहम् ||101||

निर्मोह स्वरूपोऽहम् ||102||

निरामय स्वरूपोऽहम् ||103||

निरायुष्क स्वरूपोऽहम् ||104||

निरायुध स्वरूपोऽहम् ||105||

निर्नाम स्वरूपोऽहम् ||106||

निर्गोत्र स्वरूपोऽहम् ||107||

निर्विघ्न स्वरूपोऽहम् ||108||

निर्गति स्वरूपोऽहम् ||109||

निरिन्द्रिय स्वरूपोऽहम् ||110||

निष्काय स्वरूपोऽहम् ||111||

निर्योग स्वरूपोऽहम् ||112||

निजशुद्धात्मास्मरणनिश्चयसिद्धोऽहम् ||113||

चिन्मय स्वरूपोऽहम् ||114||

ज्ञानानन्द स्वरूपोऽहम् ||115||

चतुर्गतिसंसारदूर स्वरूपोऽहम् ||116||

सप्तभयविप्रमुक्त स्वरूपोऽहम् ||117||

विशिष्टगुणपुष्ट स्वरूपोऽहम् ||118||

नवकेवललब्धि स्वरूपोऽहम् ||119||

अष्टकर्मकलंकरहित स्वरूपोऽहम् ||120||

अष्टादशदोषरहित स्वरूपोऽहम् ||121||

सप्तनयव्यतिरिक्त स्वरूपोऽहम् ||122||

क्षायिकदर्शन स्वरूपोऽहम् ||123||

क्षायिकज्ञान स्वरूपोऽहम् ||124||

क्षायिकचारित्र स्वरूपोऽहम् ||125||

क्षायिकसम्यक्त्व स्वरूपोऽहम् ||126||

परमशुद्‌धचिद्रूप स्वरूपोऽहम् ||127||

विशुद्‌धचैतन्य स्वरूपोऽहम् ||128||

शुद्‌धचित्काय स्वरूपोऽहम् ||129||

निजजीवतत्त्व स्वरूपोऽहम् ||130||

शुद्‌धजीवपदार्थ स्वरूपोऽहम् ||131||

शुद्‌धजीवद्रव्य स्वरूपोऽहम् ||132||

शुद्‌धजीवास्तिकाय स्वरूपोऽहम् ||133||

अखंडशुद्‌धज्ञानैक स्वरूपोऽहम् ||134||

स्वाभाविकज्ञानदर्शन स्वरूपोऽहम् ||135||

अनन्तचतुष्टय स्वरूपोऽहम् ||136||

नयनिक्षेपप्रमाणविदूर स्वरूपोऽहम् ||137||

अष्टविधकर्मनिर्मुक्त स्वरूपोऽहम् ||138||

अविचलितशुद्‌धचिदानन्द स्वरूपोऽहम् ||139||

अद्‌वैतपरमाल्हादसुख स्वरूपोऽहम्||140||

घातिचतुष्टयरहितोऽहम् ||141||

पञ्चमभाव स्वरूपोऽहम्||142||

शाश्वतोऽहम् ||143||

परमोत्तमस्वरूपोऽहम् ||144||

सिद्‌धोऽहम् ||145||